

Mr. Rajan Mathew,

former Senior Technical Assistant (Bact)

(1994)

Way back in 1958, I was working as a LT in the NDTC. As the institute was being established in south India, near my home in Kerala, I managed to join NTI as LT on 1.9.1959. The next day, I was promptly despatched to the field to Sira taluk in Tumkur district. The work was very tough and sometimes we would work the whole day. All of us were brought back from the field just before the inauguration. Amongst other things, I remember His Highness the late Maharaja of Mysore, the then Governor of Mysore. I felt he was a born king, a real Maharaja, a personality born to rule and to give. He was very amiable and generous too. When he spoke, his voice was loud and clear. He looked so dignified, distant and yet so near. I felt sure that if the staff coming from different parts of India asked for a favour, he would readily do.

Today, after 34 years of serving NTI, I state that I am lucky to get into the Institute. A boy then who could not face a group of people way back in 1958, today I can take a whole class for two or three hours continuously. In the TB field, I can say that I am quite competent and the laboratory work done here is very diligent and of high standards.

श्री. राजनमैथ्यु

भूतपूर्व वरिष्ठ तकनीकी सहायक
जीवाणुविभाग (१९९४)

सन् १९५८ में, मैं नयी दिल्ली क्षयरोग केन्द्र पर प्रयोगशाला तकनीकी के रूप में कार्यरत था। दक्षिण भारत में यह संस्थान मेरे गृह राज्य केरल के पास होने जा रही थी और मैंने १.९.१९५९ को प्रयोगशाला प्रविधिज्ञ के रूप में राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान में साक्षातकार देकर कार्यसेवा करने की सफलता प्राप्त कर ली। दूसरे दिन ही मुझे तुमकूर जिले के सीरा तालुक में कार्य करने हेतु भेजा गया। कार्य की कठिनता के कारण मुझे पूरे दिन व्यस्त रहना पड़ता था। उद्घाटन के दिन हम सभी क्षेत्र से वापिस लाये गये। तत्कालीन मैसूर के महम्मदियम राज्यपाल दिवंगत महाराजाधिराज को देखकर मैंने सोचा कि वह जन्म से राजा थे और राज्य करने हेतु ही पैदा हुए थे। वह प्रसन्नचित और उदार थे उनकी वाणी ऊँची और स्पष्ट थी। वह दूरस्थ होकर भी अति निकट प्रतीत होते थे। उनका व्यक्तित्व ऐसा लगता था कि यदि कोई उनसे कुछ भी माँगता तो अवश्य दे देते। परन्तु हम लोग अपनी कठिनाइयों को अपने आप निपटाने का प्रयास करते हुये राखीय कार्यों के प्रति समर्पित थे।

आज राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान की ३४ वर्षों की सेवा के उपरान्त मैं यह कहता हूँ कि मुझे संस्थान में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सन् १९५८ में एक लड़का जो एक छोटे से समूह का भी सामना नहीं कर सकता था। आज १९९४ में २ या ३ घन्टे की कक्षा ले सकता है। क्षयरोग के क्षेत्र में मैं निपुण हूँ और यहाँ की प्रयोगशाला का कार्य कौशल पूर्ण एवं उच्चकोटि का है।



*Mr. B Rama Rao
Senior PA to Director*



*Mr. Keshava Murthy
Sister Tutor*